International Conference on Science, Engineering & Technological Innovations
ICSETI-2023
Trinity Academy of Engineering, Pune
Date: 30th September 2023
ISBN : 978-93-91535-83-4

हिंदी नवगीत के प्रथम हस्ताक्षर डॉ . शम्भुनाथ सिंह

डॉ. ब्रह्म विनोद शाश्वत

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, जे एस विश्वविद्यालय शिकोहावाद

फिरोजावाद उ प्र

सारांश .

डॉ शंभूनाथ सिंह- वहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न नवेंदशक के नवगीत के प्रथम हस्ताक्षर डॉ0 शंभूनाथ का 'नवगीत' के परिक्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। इन्होनें रचनाकार, आलोचक, सम्पादक के रूप में 'नवगीत' को उन्नतशील वनाया। डॉ0 शंभूनाथ सिंह का जन्म 17 जून सन् 1917 में पावन सरयू घघरा नदी के दक्षिण खण्ड में वसे शलेमपुर तहसील (जो देवरिया जिले की प्रसिद्ध तहसील है में रावतपार ग्राम में ठाकुर रामदेव सिंह के यहॉ हुआ था। ठाकुर रामदेव अतिधर्मनिष्ठ व्यक्ति व्यक्तित्व के धनी थे। इनकी माता अति राजी देवी थी। अतिराजी देवी ने जव इस महान सपूत को जन्म दिया तव देवरिया जिले के लोगों को यह आभास नहीं हुआ था। कि वह पावन भूमि जिसमें जैन धर्म के महान तीर्थकर भगवान महावीर का लगाव था। यही के आस पास विश्व प्रसिद्ध वौद्ध धर्म के महान अवतार भगवान वुद्ध जी ने विश्राम किया था, उसी देवरिया को एक और सपूत मिला जो संस्कृति और साहित्य के इतिहास में सदैव के लिए रेखांकित किया जायेगा। डॉ0 शंभूनाथ सिंह के जन्म का स्थान वडा ऐतिहासक एवं धार्मिक महत्व का है जिस का इन पर वड़ा गहरा प्रभाव पड़ा उस समय राष्ट्रीय स्वतंन्त्रता आन्दोलन जोरों पर था। राष्ट्र में चारों ओर स्वंतन्त्रत होने के लिऐ अधिक आतुरता एवं स्फूर्ति थी। सनावरा में चौरी चौरा की क्रूर घटना तथा जलिया वाला काण्ड से राष्ट्र की आत्मा अति शोकाकुल थी। सम्पूर्ण देश का वातावरण क्षोभ एवं विद्रोह से भरा था। जिसने शंभूनाथ सिंह को वुरी तरह से प्रभावित किया जिससे इनका वचपन विद्रोही और राष्ट्रीयता वादी वन गया। इनकी माता अनपढ़ थी लेकिन ग्रह कार्यो एवं व्यवहार में बहुत पटु थी। इनकी चार सन्तान थी। सबसे वड़े लड़के का नाम स्वामीनाथ, इसके वाद मझिले शम्भूनाथ तथा इसके अलावा एक लड़का एक लड़की और थी। रामगढ़ अपनी ननिहाल में शंभूनाथ की शिक्षा दीक्षा का कार्य आरम्भ हुआ। इनका पहले पढ़ाई में मन नहीं लगा लेकिन वाद में वहुत गम्भीरता से पठन पाठन किया। अपनी कुशाग्र वुद्धि के वल पर छात्रवृत्ति भी प्राप्त की फिर यह अगली कक्षा मे लिए

ISBN : 978-93-91535-83-4

राजमझोली के स्कूल में गये। यह स्कूल गन्डक नदी के किनारे पर था जिस के सौन्दर्य ने वालक को आकर्षित किया जिस से उनके हृदय में इस नदी की प्राकृतिक सुषमा ने कविता गीत के अंकुर उत्पन्न कर दिये। उन दिनों आर्य समाज का प्रचार जोरो पर था। जिस के भाषणों से प्रभावित होकर शम्भूनाथ ने एक मोटी चोटी रखाली और रूढियों अन्ध विश्वासों का खण्डन करने लगे। फिर सर्व प्रथम गॉन्धी भाषण सुना फिर जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद एवं कमला नेहरू के भाषणों का गहरा प्रभाव पडने से इन्होने सत्य अहिसा,प्रेम, खद्दर आदि को अपना लिया, तथा पूर्ण शाकाहारी हो गये। फिर सन् 1931 ई0 में मिाडिल वर्नाक्यूलरकी परीक्षा उत्तीर्ण कर वनारस के उदय प्रताप कालेज में प्रवेश लिया वहॉ वड़ी रूचि से अध्ययन किया। वहाँ के सभी अध्यापकों ने इन्हें वहुत प्रोत्साहित किया फिर से खुद कविता पाठ लिख कर करने व करने लगे कविसम्मेलनों में जाने लगें। शम्भूनाथ ने एक प्रखर विधार्थी समाज सेवा तथा क्रांतिकारी छात्र का स्वरूप प्रदार्शिन किया। डॉ0 शम्भूनाथ सिंह का लेखन अर्धशती से ही अधिक लम्वी यात्रा का लेखन काल है।

मुख्य शब्द :- प्रतिष्ठित, लोकगीतात्मक, प्रोत्साहित , खण्डन ,समीक्षक, हस्ताक्षर, काव्यान्दोलन, ताजगीपूर्ण ,आयाम

डॉ0 शम्भूनाथ सिंह एक कुशल कलाकार है जिसने जीवन उतार चढ़ाव को अच्छी तरह देखा है और मृत्यु तथा अंधकार के बीच सत्य और वास्तविकता के अन्वेषण का दर्द भोगा है। पूर्व 'नवगीत' के क्षेत्र में एक अच्छे समीक्षक एवं सम्पादक की कमी खलती रही इस कमी को डॉ0 शंभूनाथ सिंह ने विशिष्ट योगदान देकर पूरा किया। 'नवगीत' काव्य परम्परा को वृहद परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए उन्होंने प्रतिनिधि 'नवगीतों' के सम्पादन का जो गरू उत्तरदायित्व निभाया उस का हिन्दी 'नवगीत' साहित्य के इतिहास क्रम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 'नवगीत' दशकभाग 1,2,3 का सम्पादन कर 'नवगीत' को एक नयी स्फूर्ति ताजगी कालक्रम-वद्धता का उचित संयोजन किया है। और 'नवगीत' की आलोचना समालोचना कर इसके स्वरूप को और स्पष्ट उनूठा वना दिया है। इन की आलोचना पुस्तक प्रयोगवाद और नयी कविता यह स्पष्ट प्रमाणित करती है कि- 'नवगीत' एक विशिष्ट विधा है। एक

ISBN : 978-93-91535-83-4

आलोचक के रूप में डॉ शम्भूनाथ सिंह के 'नवगीत' सम्बन्धी मन्तव्यों की विस्तृत अभि व्यक्ति हम 'नवगीत' दशक की भूमिकाओं में देखते है। इन्होंने भाग 1 में कहा है कि 'नवगीत' न कभी काव्यान्दोलन था न आज है, वह तो नयी कविता का जुडवां भाई है। भाग दो में कहा है कि 'नवगीत' आधुनिकता वोध सम्पन्न जातीय सस्कारों का काव्य है जिसका अभिव्यक्ति पक्ष बिम्व प्रधान है साथ ही भाग तीन में वे 'नवगीत' के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता के भविष्य की चर्चा करते है और प्रमाणित करते है कि 'नवगीत' आज की हिन्दी कविता निर्धारित कर सकेगी। अतः स्पष्ट है कि 'नवगीत' के भविष्य काल पर की वह प्राणवान धारा है जो हिन्दी कविता का भविष्य फल पर किये गये डॉ0 शंभुनाथ सिंह के हस्ताक्षर अंहम भूमिका रखते है। गीतकाव्य के आधार पर डॉ शंभूनाथ सिंह के ''नवगीतों' ' को तीन विषयों के अन्तर्गत वाँटा जा सकता है जिसमें प्रथम विषय उनकी ''दिवालोक' ' रचना के पहले के गीत परम्परा का है जिसमें एक संक्रमण की स्थिति है उस के वाद इन की गीत रचना ''जहाँ दर्द नीला है' ' इसी के साथ अनेक पत्र संस्कारों की अभिव्यक्ति की परिचायक रचना भौतिक की घाटी कार्तिक पूनों का मेला, पगडंडी टेर जैसे गीतों में लोक सम्वेदना की जो ताजगीपूर्ण अभिव्यक्ति है निश्चय ही इसने हिन्दी गीत को नये आयाम प्रदान किये। डॉ0 शम्भूनाथ सिंह के अधिकतर गीतों का विषय ग्राम सन्दर्भो से जुडा प्रेम है। परन्तु यह प्रेम तत्व सामाजिक संस्कारों से अभिसिक्त है। इन्होने ग्राम युवती की सहज आकाक्षाओं एवं लोक लाज का छन्द स्पष्टतः अपने गीतों में वहुत सुन्दरता लिए हुये व्यक्त किया है। डॉ शम्भूनाथ सिंह के गीतों के अन्य महत्वपूर्ण विशेषता नगर बोध की तीखी अभिव्यक्ति है। सहज एवं निश्छल ग्रामीण जीवन की जो परिणति नगरों में छायी है, वह बहुत करूण एवं त्रासद है। तमाम समस्या समाधानों के बाद 'नवगीत' की उत्तरोत्तर विकास यात्रा में डॉ शम्भूनाथ सिंह के महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्टीकरण हो जाता है। अपने समकालीन कवियों की तुलना में जो बोधगत आधुनिकता एवं प्रगतिशील चेतना उनमें विद्यमान रही है। उसी के बल पर वे 'नवगीत' काव्य

ISBN : 978-93-91535-83-4

धारा को अपना महत्वपूर्ण योग दे सके है, आज से 28,30 वर्ष पहले 'नवगीत' पर विचार करते हुऐ सबसे पहले डॉ0 शम्भूनाथ सिंह ने लिखा था कि नवगीत एक सापेक्षित शब्द है। 'नवगीत' की नवीनता युग सापेक्ष होती है। किसी भी युग मंे 'नवगीत' की रचना हो सकती है। गीत रचना की परम्परा पद्धति और भाव बोध को छोडकर नवीन पद्धति और विचारों के नवीन आयामों तथा नवीन भाव सरणियों को अभिव्यक्त करने वाले गीत जव भी और जिस युग में भी लिखे जाएगें। 'नवगीत'

अपने अपने समय मैं नयी भाषा छन्द लयगीत का नया प्रयोग किया इस लिए सव नवगीतकार ही है। प्रचलित काव्य धारा जव 1950 के वाद नयापन ओढती है विभिन्न नये कवि गीतकार अपनी ईमानदारी से इसे 'नवगीत' संज्ञा से अभिहित करते है। सही काव्य धारा 'नवगीत' के रूप मैं डॉ0 शम्भूनाथ सिंह के अनुसार स्वतन्त्र काव्य धारा वनी। आज भी स्वतन्त्र ही है। आगे भी स्वतन्त्र ही रहेगी। इस काव्य धारा के विरोधी स्वरों ने इसे भटकाने के बहुत कोशिश की पर दुशासन की तरह हार कर वैठ गये। इन सव को सही दिशा दिखाने के लिए डॉ0 शम्भूनाथ सिंह ने 'नवगीत' के शत्रु नामक लेख लिखा जिसमें उन्होंने इन्हे सच्चे गीतकार वनने तथा नवगीतकार को सहयोग देने की सलाह दी है। इस सलाह को पाकर अनेक कवि नयी कविता से हट कर कुछ नया सोचने विचारने लगे, इस प्रकार ज्यां ज्यां नई कविता पिछडी त्यांे त्यांे 'नवगीत' आगे बढ़ा। डॉ0 शम्भूनाथ का कहना है कि भारतीय गीत काव्य परम्परा में निवद्ध वैदिक कालीन है तब से अब तक गीत काव्य राग रागनियों में निवद्ध कर गाया जाता रहा है। भारत में गीत काव्य ही संगीतमय है। भारतीय विद्वानों की दृष्टि मं गीत गान में कोई अन्तर नहीं। दोनों एक ही है। सामान्य तथा सामाजिकों की रूचि छान्दसिक लयात्मक ताल वद्धता से युक्त गेय कविता में अधिक होती है। संगीत गीतपरम्परा के सभी गीतकारों ने इसे गीत के भाव जगत से ऊपर उठा कर यर्थाथ जीवन के मूल्यों से जोड़ा। जीवन में व्याप्त वेदना दर्द पीड़ा शोषण और हत्याचार पाप उत्पीड़न दमन आर्थिक

ISBN : 978-93-91535-83-4

राजनैतिक व सामाजिक दवाव एवं परिवेश की यथार्थता किसानों का भीषण शोषण अपमान और तिरस्कार यहॉ तक कि वर्ग संघर्ष की चेतना एवं अनुभूति सव कुछ 'नवगीत' में रूपान्तरित हो सकता है। इस आधार पर 'नवगीत' वास्तव में जीवन की अभिव्यंजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम माना जा सकता है। 'नवगीत' ने ही कविता को पश्चात्य फैशनपरस्ती का मोह भंग कर उसे सामान्य जनता के निकट लाकर खड़ा किया। जिससे जनता के दिलों दिमांग पर बहुत जल्दी छा गया। ऐसी स्थिति वाले नवगीत को डॉ0 शम्भूनाथ ने उसे पश्चात्य साहित्य से आगत प्रयोगवाद और नई कविता के आन्दोलनों के धक्कों को सहकर 'नवगीत' को बचाने में अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया। इन्हांने 'नवगीत' को स्वदेशी जीवन परिवेश से तो जोड़ा ही साथ ही छायावादी ईथीरियल वर्ल्ड में पुनः पहुँचाजाने से बचाकर समस्त लय संगीत व छन्द के साथ आज के मनुष्य के समसाममियिक परिवेश और जीवन संघर्षो के साथ उसे सम्बद्ध किया। डॉ0 शम्भूनाथ सिंह ने अत्यन्त दृढता के साथ वास्तविक 'नवगीत' को कृत्रिम 'नवगीत' से अलग कर उसको स्पष्ट रूपरेखा व दिशा निर्धारित की। इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। छायावादोत्तर युग के गीतों को डॉ0 शम्भूनाथ सिंह ने तीन स्तरीय भेद किए है- 1. सस्ती भावुकता शौर क्षयी रोमांस वाले गीत 2. तथ्यपरक, अनुभूतिहीन और आदेशात्मक गीत 3. गहरी अनुभूति और तीव्र संवेदना वाले गीत। इन तीनों स्तर के गीतों में तीसरे प्रकार के गीतों को ही सही अर्थ में गीत की संज्ञादी जा सकती हे। क्यों कि विंधे मन की पीड़ा अथवा उल्लास की अभिव्यक्ति इसी प्रकार के गीतों में हुई है। किसी भी रचनाकार की काव्य साहित्य क्षेत्र के योगदान एवं रचनात्मक क्षमता को ठीक ठीक जानने के लिए उसके पूरे सृजनात्मक क्रम को क्रमवद्ध जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योकि पूर्व में रची गयी रचनाओं का अध्ययन मनन किये विना काल कृमिक योगदान का पता नहीं लग सकता। डॉ0 शम्भूनाथ के काव्य संकलनों के आधार पर अनेक

ISBN : 978-93-91535-83-4

वक्तव्यों लेखों आदि को भली भॉति जानना विश्लेषण करना जरूरी हैं डॉ0 शम्भूनाथ सिंह के अव तक के प्रकाशित संकलनों की संख्या ग्यारह है।

उन्होंने स्वीकार कियाहै कि मेरा रचना काल 1945 से 1950 तक है इस अवधि में कवि ने अपनी वैयक्तिक चेतना सीमाआं से संघर्ष करते हुऐ जिस प्रकार वस्तुजगत और लोक चेतना को अंगीकार करने की सतत् चेष्टा की उसकी अभिव्यक्ति इन रचनाओं में कृमिक विकास के रूप में दिखाई देती है। वास्तव में ये रचनाऐं एक संस्कृन्तिकाल के कवि की कृतियाँ है।' ' इनकी क्षण, प्रतिधारा, आकाशवेल, आज चकाचौंद, कर्मपथ, जनदेवता, क्षणों के फूल आदि कविताएँ इसी के सत्य प्रमाण है। सन् 1950 के वाद डॉ0 शम्भूनाथ के विशेष प्रयास का वर्णन करते हुएँ हमें लग रहा है कि प्रयोगवाद व्यक्ति वाद तथा अन्तर्राष्ट्रीयवाद के दौर से जव कविता गुजरने लगी तक नयी कविता ने अपना स्थान वनाना प्रारम्भ कर दिया। अनेक प्रगतिवादी कवि भी इस धारा से जुडने लगें। इन कवियों ने छन्दमुक्त काव्य लिखकर अपनी भारतीय छान्दसिक परम्परा का भी त्याग कर दिया। विदेशी प्रभाव से आक्रान्त ये कवि गीत को भी अगीत वनाने के चक्कर में पड़ गये।

'नवगीत' जैसे स्नेह हॅसी हसते है लोग, जनम कैद, कीलों से जड़ दिया गया हू आदि प्रसिद्ध को प्राप्त कर गये हैं। उनका कारण स्पष्ट है। कि काव्यत्व की भूमि पर ये खरे उतरते है इस के वाद सन् 1986 में प्रकासित वक्त की मीनार पर उनका नवगीत का नया संकलन है जिसमें चार खण्डों 45 'नवगीत' संकलित है। पूर्व कथ्य में डॉक्टर साहव ने स्वीकार करते हुए लिखा है कि हमने एक लम्वा सयम कवि के रूप में पार किया है और वह पृथ्वी त्याग कर किसी ऊॅची मीनार पर खड़ा हो गया हू। और वहॉ से अपनी उस लम्वी यात्रा को देख रहा हूॅ। मुझे लगता है कि मीनार का जीवन उससे परे अन्तरिक्ष का जीवन है। भवा वायवी जीवन। यह जीवन तो धरती के यथार्थ से कटा हुआ निरर्थक है क्यों कि अन्तरिक्ष में कोई कव तक रह सकता है जहॉ ऑक्सीजन नही, गुरूत्व नही

ISBN : 978-93-91535-83-4

आकर्षण शक्ति नहीं। वहॉ तो केवल त्रिशंकु वनकर रहा जा सकता है। आखिर धरती पर तो उतरना होगा। जहॉ पर सव कुछ है, जो वहॉ नही है और जिसके बिना जीना न जीना दोनों वरावर है। पापृथ्वी पर रह कर जीना ही वास्तविक जीना है। इससे स्पष्ट होता है कि डॉ0 शम्भूनाथ सिंह विज्ञानवाद,भौतिकवाद, पूॅजीवादी अर्यतन्त्र से झुव्हन है और वह गांवों की संस्कृतिम को वचाने में कतिवद्ध है, इन्होने यहॉ रागात्मिक वृप्ति की रक्षा की है, साथ ही लोक जीवन की विविधि अवस्थाओं को प्रतिष्टित किया है। उसने परम्परा और संस्कृति को समृद्ध कर मनुष्य का प्रकृति से सीध् सम्बन्ध जोडने का भरषक प्रयत्न किया है। यह व्यक्तिगत अचेतन के साथ सामूहिक अचेतन की व्याख्या करते है। कुल मिलाकर डॉ0 शम्भुनाथ सिंह ने लोक साहित्य से एक ऐसी सामग्री की है। जो ध्वन्यात्मकता के साथ साथ नाद सौन्दर्य से भी युक्त है। इनकी भारतीय संस्कृति, परम्परा में आस्था इतनी गहरी है कि वे अपने गीतों में संगीत, लय, छन्द, आदि को अनिवार्य तत्व मानते है। डॉ0 शम्भुनाथ के अनुसार 'नवगीत' पूर्णतः विम्वधर्मी काव्य है जिस की वुनावट बिम्व विधान से ही हुयी है। किन्तु 'नवगीत' के विम्व पूर्ववर्ती कविता के समान अलंकृत, रूढ़ अथवा काल्पनिक नही है। उसमें या तो ऐसे अप्रतिम विम्वों का प्रयोग हुआ है जो पश्यन्ती वाक के स्तर पर अभिव्यक्त होने के कारण सर्वथा नवीन, अछूते और अकल्पनीय है या उसमें अधिकतर यथार्थ जगत के अनुद्धारित आयामों के अप्रयुक्त विम्व प्रयुक्त हुए है। इन विम्वों की पहचान ही 'नवगीत' की सही पहचान है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि नवें दशक के पुरोधा नवगीतकार डॉ0 शम्भुनाथ सिंह द्वन्दात्मक भौतिकवाद, व्यक्ति की पूर्ण स्वाधीनता, कुंठामुक्ति संघर्षशीलता, तथा पीडित शोषित समाज के पक्षधर है इन्होंने 'नवगीत' में सौन्दर्य रमणीयता छान्दसिकता के स्वद आदि की बिम्वात्मकता तथा संगीत की लय ताल आदि की प्रतिष्ठि की। प्रकृति के उपासक तथा लोक भाषा एवं लोकधुनों के जोगी डॉ0 शम्भुनाथ सिंह 'नवगीत ' के क्षेत्र में सदैव के अजर अमिट है। अर्थात सर्व प्रथम स्थान प्राप्त प्रमुख

ISBN : 978-93-91535-83-4

प्रतिनिध हस्ताक्षर है। डॉ शम्भुनाथ सिंह के अवदान के सन्दर्भ में कन्हैया लाल नन्दन का कथन है कि 'नवगीत' आन्दोलन को अपनी समूची ऊर्जा और आर्शीवाद प्रदान किया शम्भुनाथ सिंह ने जो 'समय की शिला' पर मधुर चित्र बनाते बनाते शब्द और स्वर के साथ सजग अनुभूति के होते हुऐ भी लय न होने के विक्षोभ तक पहुचे और 'नवगीत' दशक के तीन खण्ड निकाल कर नवगीतकारों के पुण्य पुरूष वन गये। 'नवगीत' के वे वकील भी वने आलोचक भी साथ ही उन्होने नयी प्रतिमाओं के प्रक्षेपण की जिम्मेदारी भी निभाई। शम्भुनाथ सिंह ने अपनी रचनाशीलता में नया मोड़ देकर 'नवगीत' की विधा के रूप में अपनी वैतालिक भूमिका निभाई।'

निष्कर्षतः शम्भुनाथसिंहके विना 'नवगीत' का इतिहास कभी सम्पूर्ण नही हो सकता।